॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ विद्या शर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

तृतीय (3वाँ) अध्याय

कर्मयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते, मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं(ङ्) कर्मणि घोरे मां(न्), नियोजयसि केशव॥1॥

व्यामिश्रेणेव वाक्येन, बुद्धिं(म्) मोहयसीव मे।
तदेकं(वँ) वद निश्चित्य, येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्॥2॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा, पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां(ङ्), कर्मयोगेन योगिनाम्॥3॥

न कर्मणामनारम्भान्, नैष्कर्म्यं(म्) पुरुषोऽश्नुते।
न च सन्न्यसनादेव, सिद्धिं(म्) समधिगच्छति॥4॥

न हि कश्चित्क्षणमपि, जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः(ख्) कर्म, सर्वः(फ्) प्रकृतिजैर्गुणैः॥5॥

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य, य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा, मिथ्याचारः(स्) स उच्यते॥6॥

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा, नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः(ख्) कर्मयोगम्, असक्तः(स्) स विशिष्यते॥7॥

नियतं(ङ्) कुरु कर्म त्वं(ङ्), कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते, न प्रसिद्ध्येदकर्मणः॥8॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र, लोकोऽयं(ङ्) कर्मबन्धनः।
तदर्थं(ङ्) कर्म कौन्तेय, मुक्तसङ्गः(स्) समाचर॥9॥

सहयज्ञाः(फ्) प्रजाः(स्) सृष्ट्वा, पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वम्, एष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥10॥

देवान्भावयतानेन, ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं(म्) भावयन्तः(श्), श्रेयः(फ्) परमवाप्स्यथ॥11॥

इष्टान्भोगान्हि वो देवा, दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो, यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः॥12॥

यज्ञशिष्टाशिनः(स्) सन्तो, मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं(म्) पापा, ये पचन्त्यात्मकारणात्॥13॥

अन्नाद्भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञः(ख्) कर्मसमुद्भवः॥14॥

कर्म ब्रह्मोद्भवं(वँ) विद्धि, ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं(म्) ब्रह्म, नित्यं(यँ) यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥15॥

एवं(म्) प्रवर्तितं(ञ्) चक्रं(न्), नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो, मोघं(म्) पार्थ स जीवति॥16॥

यस्त्वात्मरतिरेव स्याद्, आत्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च सन्तुष्टः(स्), तस्य कार्यं(न्) न विद्यते॥17॥

नैव तस्य कृतेनार्थो, नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु, कश्चिदर्थव्यपाश्रयः॥18॥

Learngeeta.com

तस्मादसक्तः(स्) सततं(ङ्), कार्यं(ङ्) कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म, परमाप्नोति पूरुषः॥19॥

कर्मणैव हि संसिद्धिम्, आस्थिता जनकादयः।
लोकसङ्ग्रहमेवापि, सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि॥20॥

यद्यदाचरति श्रेष्ठः(स्), तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं(ङ्) कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते॥21॥

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं(न्), त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं(वँ), वर्त एव च कर्मणि॥22॥

यदि ह्यहं(न्) न वर्तेयं(ञ्), जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते, मनुष्याः(फ्) पार्थ सर्वशः॥23॥

उत्सीदेयुरिमे लोका, न कुर्यां(ङ्) कर्म चेदहम्।
सङ्करस्य च कर्ता स्याम्, उपहन्यामिमाः(फ्) प्रजाः॥24॥

सक्ताः(ख्) कर्मण्यविद्वांसो, यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तः(श्), चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम्॥25॥

न बुद्धिभेदं(ञ्) जनयेद्, अज्ञानां(ङ्) कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि, विद्वान्युक्तः(स्) समाचरन्॥26॥

प्रकृतेः(ख्) क्रियमाणानि, गुणैः(ख्) कर्माणि सर्वशः।
अहङ्कारविमूढात्मा, कर्ताहमिति मन्यते॥27॥

तत्त्ववित्तु महाबाहो, गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त, इति मत्वा न सज्जते॥28॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः(स्), सज्जन्ते गुणकर्मसु।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्, कृत्स्नविन्न विचालयेत्॥29॥

मयि सर्वाणि कर्माणि, सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा, युध्यस्व विगतज्वरः॥30॥

ये मे मतमिदं(न्) नित्यम्, अनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो, मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः॥31॥

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो, नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्, विद्धि नष्टानचेतसः॥32॥

सदृशं(ञ्) चेष्टते स्वस्याः(फ्), प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
प्रकृतिं(यँ) यान्ति भूतानि, निग्रहः(ख्) किं(ङ्) करिष्यति॥33॥

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे, रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्, तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ॥34॥

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः(फ्), परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं(म्) श्रेयः(फ्), परधर्मो भयावहः॥35॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं(म्), पापं(ञ्) चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय, बलादिव नियोजितः॥36॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष, रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा, विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥37॥

धूमेनाव्रियते वह्निः(र्), यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भः(स्), तथा तेनेदमावृतम्॥38॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

आवृतं(ञ्) ज्ञानमेतेन, ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय, दुष्पूरेणानलेन च॥39॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः(र्), अस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष, ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥40॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ, नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं(म्) प्रजहि ह्येनं(ञ्), ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥41॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुः(र्), इन्द्रियेभ्यः(फ्) परं(म्) मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिः(र्), यो बुद्धेः(फ्) परतस्तु सः॥42॥

एवं(म्) बुद्धेः(फ्) परं(म्) बुद्ध्वा, संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं(म्) महाबाहो, कामरूपं(न्) दुरासदम्॥43॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

स्तर 3 उच्चारण नियमावली

- **विशिष्ट स्वर और उनकी मात्राएँ** - ह्रस्व **ऋ** = ृ - क्+ऋ = **कृ**, दीर्घ **ॠ** = ॄ - क्+ॠ = **कॄ**
- **अल्पप्राण व्यञ्जन** - जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में श्वास-वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है
  क्,ग्,ङ्,च्,ज्,ञ्,ट्,ड्,ण्,त्,द्,न्,प्,ब्,म्,य्,र्,ल्,व्
- **महाप्राण व्यञ्जन** - ऐसे व्यञ्जन जिनको बोलने में अधिक प्रयत्न करना पड़ता है और बोलते समय मुख से अधिक वायु निकलती है। ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, ह्
- **आदेश** - किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण शत्रु की भांति उसके स्थान पर आ बैठता है। (शत्रुवदादेश:)
- **आगम** - किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्र की भांति पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है। (मित्रवदागम:)
- **स्वर या अच् सन्धि** दो स्वरों के मेल से स्वर में परिवर्तन होने के कारण इन्हें स्वर-सन्धि कहते हैं।

1. दीर्घ सन्धि – अक: सवर्णे दीर्घ: - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + अ/आ = **आ** (भय्+अ+अभये= भयाभये)
इ/ई + इ/ई = **ई** (भ्रमत्+इ+इव = भ्रमतीव)
उ/ऊ + उ/ऊ = **ऊ** (तेष्+उ+उपजायते = तेषूपजायते)
ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = **ॠ** (पित्+ऋ+ऋणम् = पितॄणम्)

2. गुण सन्धि – आद्गुण: - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + इ/ई = **ए** (विगत्+अ+इच्छा = विगतेच्छा)
अ/आ + उ/ऊ = **ओ** (पुर्+आ+उवाच = पुरोवाच)
अ/आ + ऋ/ॠ = **अर्** (मह्+आ+ऋषीणाम् = महर्षीणाम्)
अ/आ + ऌ = **अल्** (तव्+अ+ऌकार: = तवल्कार:)

3. यण् सन्धि – इको यणचि - प्रथम वर्ण के स्थान पर आदेश

इ/ई + अन्य कोई भी स्वर = **य्** (कर्मण्+इ+एव = कर्मण्येव)
उ/ऊ + अन्य कोई भी स्वर= **व्** (त्+उ+एवाहम् = त्वेवाहम्)
ऋ/ॠ + अन्य कोई भी स्वर= **र्** (जाग्+ऋ+अति = जाग्रति)
ऌ + अन्य कोई भी स्वर = **ल्** (ऌ+आकृति: = लाकृति:)

4. वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + ए/ऐ = **ऐ** (सहस्+आ+एव = सहसैव)
अ/आ +ओ/औ = **औ** (च् +अ+ओषधी: = चौषधी:)

5. अयादि सन्धि – एचोऽयवायाव:- प्रथम वर्ण के स्थान पर आदेश

ए + कोई भी स्वर = **अय्** (राजर्ष्+ए+अ: = राजर्षय:)
ऐ + कोई भी स्वर = **आय्** (न्+ऐ+अका: = नायका:)
ओ + कोई भी स्वर= **अव्** (मन्+ओ+ए = मनवे)
औ + कोई भी स्वर= **आव्** (द्व्+औ+इमौ =द्वाविमौ)

6. पूर्वरूप सन्धि – एङ: पदान्तादति - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

पदान्त ए + अ = **एऽ** (त्+ए+अभिहिता = तेऽभिहिता)
पदान्त ओ + अ =**ओऽ** (दृष्ट्+ओ+अन्त: = दृष्टोऽन्त:)

Learngeeta.com

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।